अर्बुद

कैंसर

केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद्
आयुष मंत्रालय
(आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध एवं होम्योपैथी)
भारत सरकार

अर्बुद क्या है ?

दूषित दोष (वात, पित्त एवं कफ)
मांस और रक्त धातु को प्रभावित कर
अर्बुद रोग (कैंसर) उत्पन्न करते हैं।

इस रोग के लक्षण क्या हैं?

- शरीर के किसी अवयव में अवांछित, अनियंत्रित वृद्धि।
- गहराई में स्थित, पूयरहित व्रण।
- वेदना रहित स्राव।
- परिवर्तित क्रियाएँ।

इसके कारण क्या हैं?

निम्नलिखित आहार विहार का निरन्तर उपयोग रोगोत्पादन के लिए उत्तरदायी है:

- अहित आहार हानिकारक प्रतिरक्षकयुक्त और कीटाणु दूषित पदार्थ का नियमित प्रयोग।
- मांस, तम्बाकू, सिगरेट, बीड़ी आदि का सेवन।
- रासायनिक/भौतिक क्षोभक पदार्थों (सूर्यप्रकाश, विकरण) का निरन्तर सम्पर्क
- कुछ विशिष्ट औद्योगिक कार्य

- अर्बुद जनन (कार्सिनो–जेनिक) औषधियों का अधिक सेवन।
- जल एवं वायु प्रदूषण

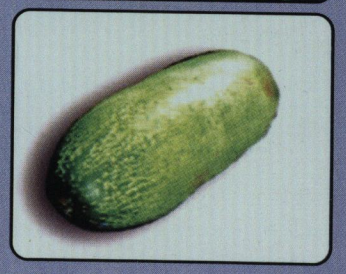

आयुर्वेदीय चिकित्सा

शरीर के अंगों, अर्बुद के प्रकार और अर्बुद की अवस्था के अनुसार चिकित्सा की जाती है।

- रसायन चिकित्सा : रोगक्षमता वृद्धि हेतु।
- कतिपय आयुर्वेदिक औषधियां जैसे– हरिद्रा, वरूण, शिग्रु, बिल्व, शतावरी, कण्टकारी, हरीतकी, कांचनार, बृहती, बिम्बी इत्यादि इस रोग में लाभदायक है।

- कतिपय औषध योग– अमृत भल्लातक, योगेन्द्ररस, नवरत्नराजमृगांक रस इस रोग में लाभदायक है (चिकित्सक की देख–रेख में ही यह औषधियां लें)

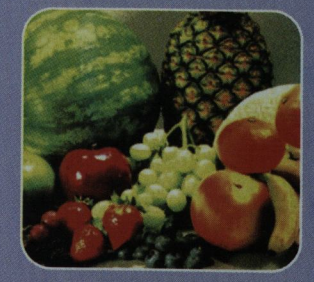

- स्थानिक चिकित्सा : जैसे औषधीय लेप एवं तैल इत्यादि का प्रयोग
- अग्नि (थर्मोकोटराइजेशन) और क्षारकर्म चिकित्सा
- अर्बुद का सूमल छेदन

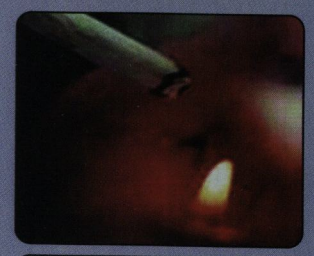

पथ्य (क्या करें)

- ✓ शाकाहारी आहार
- ✓ फल आदि का बहुतायत से सवन
- ✓ स्वस्थ वातावरण में रहना
- ✓ मानसिक शांति बनाए रखना।

अपथ्य (क्या न करें?)

- ✗ उच्च संसाधित आहार
- ✗ कीटनाशक प्रदूषित आहार
- ✗ अतिशय मांस सेवन
- ✗ तम्बाकू एवं मद्य का अत्याधिक प्रयोग
- ✗ कुछ विशिष्ट औद्योगिक कार्य
- ✗ प्रदूषित जल एवं वायु सेवन

सी.सी.आर.ए.एस. का योगदान

- नवजीवन नामक एंटी कैंसर औषधि का विकास
- चिरायता से कैंसररोधी घटकों का पृथकीकरण
- रोहितक, भल्लातक, मधुयष्टी और ताम्रभस्म पर निदान चिकित्सात्मक अध्ययन
- कैंसर रोगियों में प्रतिरोधक क्षमता विकास हेतू क्यु० ओ० एल०–1 का विकास